

संसारं प्रविचिष्य R. 5,66,33.

— सम् 1) *denken, bei sich denken, nachdenken, überlegen*: चतुर्थे ऽहनि मत्तव्यमिति संचित्य SĀV. 4,3. देवमिति संचित्य PĀNĀT. II,147. स एवं चित्ते संचित्तवान् 197,19. मनसा समचित्तयम् MBh. in BENF. Chr. 37,2. N. 21,23. एवं संचित्तयित्वा HARIV. 8023. N. 3,13. इति संचित्य MBh. in BENF. Chr. 54,16. HIT. 14,8. KATHAS. 5,7. VID. 173.242. RĀGA-TAR. 5,312. साधु संचित्य MBh. 4,908. संचित्तयित्वा निपुणम् R. 6,7,4. तत्संचित्यान्यः काश्चिद्वा विरुग्णानां क्रियताम् PĀNĀT. 157,20. तद्यथा कस्य कार्यस्य न भवेदन्यथा गतिः । यूयं हि बुद्धिशास्त्रज्ञाः संचित्तयितुमर्हथ ॥ R. 5,1,86. — 2) *an Jmd oder Etwas denken, gedenken, sinnend auf, sich in Gedanken womit beschäftigen, bedenken*; mit dem acc.: मां हि संचित्तयती R. 2,38,16. बुद्ध्या संचित्य वानरान् 5,1,90. 30,17. KĀURAB. 33. KĀT. 7. संचित्तयेद्भवतश्चरणारविन्दम् BHĀG. P. 3,28,21. गुरुलाघवम् M. 9,299. कर्मफलोदयम् 11,231. JĀG. 1,359. कर्तव्यस्य विनिश्चयम् MBh. 1,7687. धर्मार्था 2,219. 1653. BENF. Chr. 39,1. DRAUP. 3,9. संचित्य गीतनमर्थबन्धम् ÇĀK. 164. एतत्संचित्य मनसा R. 3,50,25. 48,17. ते ऽपि शास्त्राणि संचित्य प्रोचुः PĀNĀT. 235,3. — 3) *Jmd zu Etwas bestimmen*: भरतस्तु — यदा भगवतावनितलपरिपालनाय संचित्तः BHĀG. P. 5,7,1.

— अनुसम् *nachsinnen*: मुहूर्तमनुसंचित्य MBh. 14,59.

— अभिसम् *gedenken*: तन्नममभिसंचित्य MBh. 7,5551.

चित् m. angeblich = चित्ता 1. Lois. zu AK. 1,1,3,29.

चित्तक (von चित्) adj. subst. *der über Etwas nachgedacht hat, sich um Etwas kümmert, Kenner*; am Ende eines comp.: अष्टमं पर्व निर्दिष्टमेतद्भारतचित्तकैः MBh. 1,548. अथ्यात्म 7777. 12,7970. अथ्यात्मगति 13,7172. धर्म 10,52. शास्त्र 3,17395. व्यतीतार्थ R. 3,33,74. बुद्धि 5,81,8. देव Astrolog MBh. 12,4454. वंश Genealog HARIV. 812. स्थान PĀNĀT. 156,22. सर्वार्थ M. 7,121. — Vgl. कार्य, ग्रह.

चित्तन (wie eben) n. *das Denken*: पूर्व die frühere Art und Weise zu denken RĀGA-TAR. 5,200. *das Denken an Jmd oder Etwas, das Nachdenken über, Sorge um*: ततः स राजा सस्मार मामेव — तदाहं चित्तनं ज्ञात्वा गतवोस्तस्य दर्शनम् MBh. 12,1126. मनसानिष्टचित्तनम् M. 12,5. धर्म H. 1381. एकचित्तनमर्थानामनर्थज्ञैश्च चित्तनम् MBh. 2,242. SĀH. D. 35,17. 20. अरि H. 715. भूभारचित्तनैः KATHAS. 9,12.

चित्तनीय (wie eben) adj. *woran man zu denken hat, worauf man seine Aufmerksamkeit zu richten hat, ausfindig zu machen*: बुधैः शेषमचित्तनीयम् PĀNĀT. III,221. प्रभाप्रभं चित्तनीयम् VARĀH. BRH. S. 42 (43),37. अर्थोपायाश्चित्तनीयाः कर्तव्याश्च PĀNĀT. 6,7. 191,9. BHĀG. P. 8,11,38.

चित्तपितव्य (wie eben) adj. *dessen man zu gedenken hat*: चित्तपितव्यो ऽस्मि ते MĀLAV. 24,20.

चित्ता (wie eben) f. P. 3,3,105. VOP. 26,192. in Verbindung mit कृ gaṇa सातादादि zu P. 1,4,74. 1) *Gedanken, insbes. trübe Gedanken, Sorgen*; *Sorge um, das Denken an, das Nachdenken über*; *Beachtung* AK. 1,1,3,29. TRIK. 1,1,130. H. 320. चित्ता बहुतरि तृणात् *Gedanken sind zahlreicher als Gras* MBh. 3,17345. मरुतीह चित्ता PĀNĀT. I,226. तस्यैवं ब्रुवतश्चित्ता बभूव R. 1,2,19. 64,17. तस्य चित्ता समुत्पन्ना PĀNĀT. 6,6. इति मामाविशच्चित्ता शल्यापकर्षणे DAÇ. 1,44. चित्तपाविष्टः R. 1,55,8. चित्ता प्रपत्स्यते 8,17. चित्तामपेदिरे पराम् 4,33,5. HARIV. 8830. चित्तामभ्यपद्यत DAÇ. 1,1. चित्तामुपेयिवान् N. 10,9. चित्ता दीर्घतमा प्रातः BHĀG.

P. 7,3,44. चित्तामपरिमयो च प्रलयात्तामुपाश्रिताः BHĀG. 16,11. चित्तामभ्यागमत् R. 3,4,20. चित्ता प्रपन्नो बभूव VET. 16,9. चित्तापन्न 24,11. अतश्चित्ता पुत्र कार्यत्र न त्वया *du brauchst dir keine Gedanken zu machen* KATHAS. 4,10. (तस्य) कृते चित्ता च मा कथाः VID. 167. चित्तामुत्पादयति मे R. 3,7,31. न कामपि चित्तामस्माकं करोति PĀNĀT. 157,6. चित्ताचक्रमावृणोति 233,14. चित्तासागरमध्यस्थ R. 1,9,44. चित्ताभारतकंधर DHŪRTAS. 72,8. चित्ता मे पुत्र यद्वार्या सदृशी नास्ति ते क्वचित् KATHAS. 3,57. अस्यामहं त्वयि च संप्रति वीतचित्तः ÇĀK. 88. किं तव ममोपरि चित्तया PĀNĀT. 94,12. कुटुम्बभारस्य चित्ताभिः V. 4. घृतलवणतैलतण्डुलवस्त्रेन्धनचित्ता 5. राष्ट्र H. 715. शरीरं JĀG. 1,98. यज्ञकर्म R. 1,11 in der Unterschr. भर्तु das Denken an 5,57,11. आत्म M. 12,34. गुरुलाघव SUCR. 1,239,15. तेषां हि चित्तये परिकीर्तिता *bei denen muss man dieses beachten* 18. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers RĀGA-TAR. 8,3453.

चित्ताकर्मन् (चि + कर्मन्) n. *trübe Gedanken* TRIK. 3,2,28.

चित्ताकारिन् (चि + का) adj. *in Betracht ziehend, erwägend*: उक्तानुक्तदुरुक्ताचित्ताकारि तु वार्तिकम् H. 256.

चित्तापर (चि + पर) adj. f. *in Gedanken vertieft* N. 2,2. 12,86.

चित्तामणि (चि + मणि) m. 1) *ein Edelstein, der die Zauberkraft besitzt das herbeizuschaffen worauf der Besitzer seine Gedanken gerichtet hat*: चित्तामणिनुदाराश्च चित्ति सर्वकामदान् HARIV. 8702. काचमूत्येन विक्रीतो हस्त चित्तामणिर्मया sprichwörtlich ÇĀNTIÇ. 1,12. — BHART. 3,62. WASSILJEV 171. चातुर्य als Beiwort Vopadeva's VOP. S. 156. *der Stein der Weisen* (vgl. स्पर्शापल): यथा चित्तामणिं स्पृष्ट्वा लौहं काश्चनता भजेत् PĀDMOTTARAKHANDA im ÇKDr. Als Titel von Lehrbüchern und Commentaren Z. d. d. m. G. II,341 (No. 198); vgl. ग्रन्थान्, उपमान, कृत्य, जन्म, मुहूर्त und Ind. St. 1,159. Verz. d. B. H. No. 683.1170.1218. — 2) Bein. Brahman's ÇABDAR. im ÇKDr. — 3) N. pr. eines Buddha TRIK. 1,1,16. — 4) N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 876.877.

चित्तामय (von चित्ता) adj. *in der Form des Gedankens erscheinend*: ईतं चित्तामयेनमोश्चरं यावन्मनो धारणायावतिष्ठते BHĀG. P. 2,2,12. *aus den Gedanken an — hervorgehend*, am Ende eines comp.: रामचित्तामयः शोकः R. 2,83,16.

चित्तावत् (wie eben) adj. *gedankenvoll* WILS.

चित्तावेश्मन् (चि + वे) n. *ein Gebäude oder ein Gemach, in welchem Beratungen gehalten werden*, HĀR. 168.

चित्ति m. N. pr.: चित्तिमुराष्ट्राः gaṇa कार्तिकेयपादि zu P. 6,2,37.

चित्तिडी f. falsche Form für तित्तिडी DVIRĀPAK. im ÇKDr.

चित्तित (part. praet. pass. von चित् 1) adj. s. u. चित्. — 2) f. *ein Frauenzimmers* P. 4,1,113, Sch. — 3) n. *Gedanke*: चित्तितं वद *sage was ich jetzt denke* VARĀH. BRH. S. 30,24. MATSJO. 37. *Absicht*: न्यवेदयथावृत्तं जनकस्य च चित्तितम् R. 1,70,7. 57,12. *Gedanken, Sorgen*: शश्वत्प्रकीर्णधनचित्तितवीतनिद्र DHŪRTAS. 74,17.

चित्तिति f. = चित्ता 1. ÇĀBDAR. im ÇKDr.

चित्तिपा f. dass. TRIK. 1,1,130 (die gedr. Ausg.: चित्तिपा).

चित्तिक्ति f. *midnight cry or alarm* WILS. Falsche Form für चित्रोक्ति.

चित्य (von चित्) 1) adj. a) *zu denken, vorzustellen*: तेनेशितं कर्म विवर्तते ह पृथ्व्याप्यतेजोऽनिलखानि चित्यम् als ÇVETĀÇV. UP. 6,2. केपु केपु च भावेषु नित्यो ऽसि मया BHĀG. 10,17. अचित्य (s. auch bes.) MĀND.